जातिवाद और डॉ. भीमराव अम्बेडकर

डॉ. राकेश रोशन सिंह

'हरिजन' तो हर एक है,
पर हरिजन का अर्थ – मेहतर या भंगी है।
किस हिन्दू ने उनको हरिजन माना,
सबने उनको भंगी ही जाना ।
यह कैसी सामाजिक क्रान्ति,
सोच की यह कैसी दुर्गति।
सवर्णों को हरिजन बोल के देखना,
आग बबूला न हो जाए तो हमने कहना।
कोई नारी अपमानित होकर धन्यवाद नहीं दे सकती है,
वही नारी अपना शील भंग हो जाने के बाद कैसे धन्यवाद दे सकती है।
कोई राष्ट्र अपनी स्वाधीनता खोकर धन्यवाद नहीं कर सकता है,
वही अछूत हरिजन के वर्ण से अपमानित होकर कैसे धन्यवाद कर सकता है।
क्या ओस की बूँदों से प्यास बुझ सकती है,
क्या हरिजन कहलाने से हिन्दू धर्म में उनका उपेक्षा रुक सकती है।
क्या हरिजन कहलाने से अछूत नहीं रहेगा,
क्या मैला नहीं उठाएगा या झाड़ू नहीं लगाएगा।
भाषणों में कहते हैं कि जात–पाँत समाज के लिए नासूर है,
फिर वर्णवादी कैसे कहते हैं कि वे बेकसूर हैं।
वाल्मीकि को तो हम आदि कवि मान महिमामंडित कर रहे हैं,
पर उनकी संतान आज भी अभिशप्त जीवन जी रहे हैं।
वाह री ! सामाजिक क्रान्ति क्या न्याय है,
हरिजनों के साथ छुआ–छूत, कैसा अन्याय है।